REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

व्यक्तियों के समायोजन पर पूर्वाग्रह के प्रभाव का अध्ययन

मनोज कुमार सिंह[1] , डॉ० पूनम सिंह[2]
[2]शोधार्थी , मनोविज्ञान विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा।
[2]एशोसिएेट प्रोफेसर , मनोविज्ञान विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा।

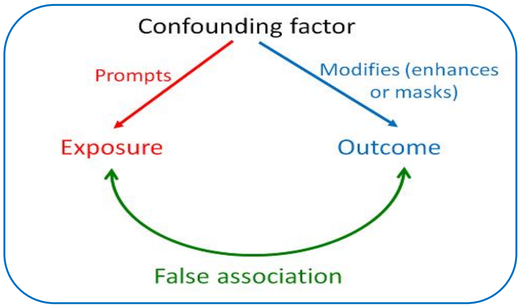

शोध–सार

प्रस्तुत शोध व्यक्तियों के समायोजन स्तर पर पूर्वाग्रह के प्रभाव को जानने के उद्देश्य से किया गया। इसके लिऐ सारण जिला के ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों से उद्देश्यात्मक प्रतिदर्शन के आधार पर 200 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। उत्तरदाताओं की उम्र 22 वर्ष से लेकर 36 वर्ष (औसत उम्र 29 वर्ष) थी, एवं सभी उत्तरदाताएँ मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य थे। कुल 200 उत्तरदाताओं में 100 उत्तरदाताएँ शहरी एवं 100 उत्तरदाताएँ ग्रामीण उत्तरदाताएँ थी। साथ हीं, पुरूष एवं महिलाएँ क्रमशः 100 एवं 100 की संख्या में थे। भारद्वाज एवं शर्मा (1990) द्वारा विकसित पूर्वाग्रह मापनी शमशाद एवं के० जहाँ (1987) द्वारा विकसित समायोजन अविष्कारिका एवं स्वयं द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र की सहायता से संगत प्रदत्त–संग्रह किया गया। संग्रहित किये गये प्रदत्तों को टी–परीक्षण सांख्यिकीय विधि द्वारा विश्लेषित किया गया। परिणाम के रूप में – (i) पूर्वाग्रह एवं समायोजन के बीच नकारात्मक–सह–संबंध पाया गया, (ii) पूर्वाग्रह से ग्रसित उत्तरदाताओं के समायोजन स्तर की अपेक्षा पूर्वाग्रह रहित उत्तरदाताओं का समायोजन स्तर अच्छा पाया गया एवं (ii) ग्रामीण उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह की भावना अधिक एवं शहरी उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह की भावना अपेक्षाकृत कम पाई गई।

परिचय :

आज के वर्त्तमान युग में जहाँ एक तरफ वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति हुई है, वहीं दूसरी तरफ मनुष्य अंधविश्वास एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों से अछूता नहीं रहा है। कभी–कभी ऐसा प्रतीत होता है, कि मानव के जीवन पर इन नकारात्मक प्रवृत्तियों का हीं प्रभाव रहता है और उसकी हरेक गतिविधियाँ संचालित होती रहती है।

पूर्वाग्रह एक तरह का निर्णय होता है, जिसका कोई आधार या अनुकूल अर्थ नहीं होता है, अर्थात् व्यक्ति के द्वारा प्रतिकूल अभिवृत्ति होती है। न्यूकॉम्ब (1950) के अनुसार पूर्वाग्रह एक प्रकार की प्रतिकूल अभिव्यक्ति होती है, जो दूसरे पक्षों या लोगों के प्रति विरोधी भावना से होती है। पूर्वाग्रह के संबंध में विशेषज्ञों का कहना है, कि किसी व्यक्ति में पूर्वाग्रह की नींव बचपन में हीं पड़ जाती है, जैसे; बचपन में परिवार में बच्चों को यह बात सीखाई जाती है, तुम्हें किसी निश्चित जाति के साथ सकारात्मक व्यवहार नहीं करना है। अर्थात् अश्पृश्यता की भावना प्रविष्ट करा दी जाती है।

विभिन्न शोधों के आधार पर बताया गया है, कि पूर्वाग्रह व्यक्तिगत निर्णय से रहित होता है, एवं निराधार निर्णय पर आधारित होता है। साथ हीं, दूसरे समूह के प्रति विरोधी भावना होती है। इस भावना के कारण एक–दूसरें समूह के बीच के वक्तियों में भेद–भाव की भावना उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है।

शैक्षिक संस्थानों के संदर्भ में भी पूर्वाग्रह की अभिवृत्ति देखी जाती है। प्रायः शिक्षक–शिक्षक के बीच, शिक्षक–छात्रों के बीच, शिक्षक प्रबंधन के बीच एवं छात्रों के बीच पूर्वाग्रह देखी जाती है। जिस कारण पूर्वाग्रह से ग्रसित एवं पूर्वाग्रह पीड़ित का मनोवैज्ञानिक अवस्था प्रभावित होती है और शैक्षिक स्तर प्रभावित होता है।

समायोजन का अर्थ होता है, परिस्थिति के अनुसार अपने को बदलना। अर्थात् जब व्यक्ति बिना किसी टकराव अपने परिवेश में रहने लगता है, तो वह समायोजित व्यक्ति कहलाता है। वास्तविक रूप से समायोजन एक व्यापक शब्द है, जिसमें केवल भौतिक विशेषताओं की बात नहीं की जाती है, बल्कि यह एक आंतरिक विशेषता होती है, जो व्यक्ति के रहने, जीवन व्यापन का स्तर, व्यवहार, दूसरे व्यक्ति के साथ अनुक्रियाएँ इत्यादि को अधिक सूक्ष्मतापूर्वक प्रभावित करती है।

समायोजन की महता मानव जीवन के लिए अधिक महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि व्यक्ति समायोजन के सहारे हीं मनोवैज्ञानिक संतुष्टि एवं प्रशन्नता को हासिल कर सकता है एवं जीवन को विकाशशील बना सकता है। एक समायोजित व्यक्ति हीं दूसरे व्यक्ति को समायोजित होने में आवश्यक सहयोग कर सकता है।

विद्यालय के संदर्भ में छात्रों, शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधनों एवं अन्य कारकों के साथ अच्छे संबंध के लिऐ समायोजन की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। छात्रों का विद्यालय में यदि समायोजन सही रहता है, तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी सही ढंग से होती है।

पूर्व के अध्ययनों की समीक्षा :

प्रस्तुत शोध में आवश्यक सहयोग के लिए कुछ पूर्व के अध्ययनों का अवलोकन किया गया है। पेरी (1949) ने भिन्न–भिन्न प्रकार के विश्वास करने वाले समूहों के लोागों के पूर्वाग्रह का अध्ययन किया है और अध्ययन परिणाम में पाया है, कि प्रोटेस्टेन्ट समूह के लोग अधिक पूर्वाग्रह की भावना से चर्च जाते हैं। इसी तरह रॉस (1950) ने अपने अध्ययन में बताया है, कि ऐथिस्ट और एग्नोस्टिक्स के बीच पूर्वाग्रह में कोई अंतर नहीं होता है। एडोरनों इत्यादि (1950) के अनुसार धार्मिक लोगों में अधार्मिक लोगों की अपेक्षा पूर्वाग्रह अधिक होता है। ऑलपोर्ट एवं रॉस (1967) ने भी ऐडोरनो इत्यादि के द्वारा किये गये शोध परिणाम का समर्थन किया है। एक अन्य अध्ययन में ऑलपोर्ट एवं रॉस (1967) ने धार्मिकता एवं पूर्वाग्रह के बीच का संबंध शिक्षा से प्रभावित होता है। नटराज (1965) ने सामाजिक संबंध का अध्ययन किया है और बताया है, कि सिंधी समुदाय के लोग अन्य समुदाय के लोगों का सामाजिक संबंध अधिक दूर का होता है। सरकार एवं हसन (1973) ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया है, कि हिन्दूओं में अन्य समुदाय के लोगों की अपेक्षा आर्थिक रूढ़िवादिता अधिक होती है।

इस तरह, इन विभिन्न अध्ययनों में व्यक्तियों के समायोजन एवं पूर्वाग्रह को लेकर कमी प्रतीत होती है। यहाँ पर शोधार्थी द्वारा व्यक्तियों के समायोजन पर पूर्वाग्रह के प्रभाव का अध्ययन नामक शीर्षक पर करने का निर्णय लिया गया है।

शोध का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों के समायोजन पर पूर्वाग्रह के प्रभाव का अध्ययन करना था।

शोध की परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध की मुख्य परिकल्पनाएँ निम्नांकित थी :

(i) व्यक्तियों के पूर्वाग्रह एवं समायोजन में नकारात्मक सह–संबंध होगा,

(ii) पूर्वाग्रह ग्रसित व्यक्तियों के समायोजन स्तर एवं पूर्वाग्रह रहित व्यक्तियों के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर होगा,

(iii) ग्रामीण एवं शहरी उत्तरदाताओं के पूर्वाग्रह स्तर में सार्थक अंतर होगा।

प्रविधि :

(i) प्रतिदर्श :

प्रस्तुत शोध में उत्तरदाताओं के रूप में कुल 200 व्यक्तियों का चयन किया गया। उत्तरदाताओं की उम्र सीमा 22 वर्ष से लेकर 36 वर्ष (औसत उम्र 29 वर्ष) थी।

(ii) प्रतिदर्श चयन की विधि :

प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्शों के चयन में उद्देश्यात्मक चयन विधि का अवलोकन किया गया।

(iii)अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत शोध में अध्ययन क्षेत्र के रूप में सीवान (शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों) जिला का चयन किया गया।

(iv)शोध मापनियाँ :

प्रस्तुत शोध में निम्नांकित शोध मापनियों का प्रयोग किया गया।

(i) पूर्वाग्रह मापनी :

उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह स्तर की जानकारी हेतू भारद्वाज एवं शर्मा (1990) द्वारा विकसित पूर्वाग्रह मापनी का प्रयोग किया गया। यह मापनी भारतीय संदर्भ में व्यक्तियों में पूर्वाग्रह स्तर की जानकारी हेतू अत्यन्त विश्वसनीय, वैध, वास्तविक एवं उपयुक्त मापनी है।

(ii)समायोजन मापनी :

उत्तरदाताओं में समायोजन स्तर की जानकारी हेतू मोहसिन शमशाद एवं के० जहाँ (1987) द्वारा प्रतिपादित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया। इस मापनी में गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं सांवेगिक समायोजन से संबंधित कुल 127 एकांश हैं। मापनी पर उत्तरदाताओं द्वारा प्राप्त उच्चतम अंक खराब समायोजन एवं निम्न अंक अच्छा समायोजन को दर्शाता है। यह मापनी भी भारतीय संदर्भ में व्यक्तियों में समायोजन स्तर की जानकारी हेतू एक विश्वसनीय मापनी है।

(iii)व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र :

उत्तरदाताओं के संबंध में व्यक्तिगत जानकारी जैसे; नाम, उम्र, यौन, शहरी–ग्रामीण निवास, परिवार का आकार, परिवार का प्रकार, परिवार में सदस्यों की संख्या, व्यवसाय, शिक्षा, परिवार का शैक्षिक इतिहास एवं उत्तरदाताओं के प्रति परिवार के सदस्यों की मनोवृत्ति इत्यादि की जानकारी हेतू स्वयं द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना–प्रपत्र का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त संग्रह :

शोधार्थी द्वारा सभी चयनित मापनियों के सेट के साथ अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण करते हुए चयनित उत्तरदाताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क किया गया और उनसे मिलने का प्रयोजन बताया गया। तत्पश्चात् एक स्थल का चयन करके सामूहिक रूप से उत्तरदाताओं का छोटा समूह बनाकर सभी मापनियों को प्रशासित किया गया और प्रदत्त–संग्रह का कार्य सम्पन्न किया गया। सभी उत्तरदाताओं को आवश्यक सहयोग के लिए धन्यवाद किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

संग्रहित किये गऐ प्रदत्तों को सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर विश्लेषित करते हुए समसामयिक संदर्भ में परिणाम तैयार किया गया।

परिणाम :

सारणी संख्या (i)
पूर्वाग्रह एवं समायोजन में सह–संबंधात्मक परिणाम :

पूर्वाग्रह मापनी	समायोजन का स्तर	विश्वास का स्तर
.84	.79	<.05

सारणी संख्या (ii)
उत्तरदाताओं के समायोजन पर पूर्वाग्रह के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन संबंधी परिणाम :

समूह	संख्या	माध्य	मानक–बिचलन	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
पूर्वाग्रह ग्रसित उत्तरदाताएँ	85	26.71	6.11	9.34	<.01	153
पूर्वाग्रह रहित उत्तरदाताएँ	70	19.33	3.74			

सारणी संख्या (iii)
शहरी एवं ग्रामीण उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह का तुलनात्मक अध्ययन संबंधी परिणाम :

समूह	संख्या	माध्य	मानक–बिचलन	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
शहरी उत्तरदाताएँ	100	21.30	4.93	6.71	<.01	198
ग्रामीण उत्तरदाताएँ	100	26.40	5.84			

परिणाम :

सारणी संख्या–01 के अवलोकन से स्पष्ट है, कि पूर्वाग्रह एवं समायोजन में नकारात्मक सह–संबंध है। इस तरह के परिणाम के संबंध में स्पष्ट है, कि व्यक्तियों में पूर्वाग्रह की भावना बढ़ने पर उसका समायोजन प्रभावित होता है अर्थात् उसमें समायोजन संबंधी समस्याएँ आती है। इस संबंध में प्राप्त परिणाम विश्वास के <.05 स्तर पर सार्थक भी पाया गया।

सारणी संख्या–02 के अवलोकन से स्पष्ट है, कि पूर्वाग्रह ग्रसित उत्तरदाताओं का समायोजन स्तर खराब है, जबकि पूर्वाग्रह रहित उत्तरदाताओं का समायोजन स्तर अच्छा है। क्योंकि पूर्वाग्रह ग्रसित उत्तरदाताओं ने जहाँ समायोजन मापनी पर अधिक माध्य (26.71) एवं मानक बिचलन (6.11) प्राप्त किया है, वहीं पूर्वाग्रह रहित उत्तरदाताओं ने समायोजन मापनी पर कम माध्य (19.33) एवं मानक बिचलन (3.74) प्राप्त किया है। साथ ही, इन माध्य एवं मानक बिचलनों के आधार पर परिकलित टी–मूल्य (9.34) विश्वास के <.01 स्तर पर सार्थक पाया गया।

सारणी संख्या–03 के अवलोकन में स्पष्ट है, कि शहरी उत्तरदाताओं ने जहाँ पूर्वाग्रह मापनी पर माध्य (21.30) एवं मानक–बिचलन (4.93) प्राप्त किया है, वहीं ग्रामीण उत्तरदाताओं ने पूर्वाग्रह मापनी पर माध्य (26.40) एवं मानक–बिचलन (5.84) प्राप्त किया है। साथ हीं, टी–मूल्य (6.71) विश्वास के <.01 स्तर पर भी सार्थक पाया गया। इस परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है, कि शहरी उत्तरदाताओं की अपेक्षा ग्रामीण उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह की भावना अधिक पाई जाती है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में स्पष्ट है, कि :

(i) पूर्वाग्रह एवं समायोजन में नकारात्मक सह–संबंध होता है,

(ii) पूर्वाग्रह ग्रसित उत्तरदाताओं के समायोजन स्तर की अपेक्षा पूर्वाग्रह रहित उत्तरदाताओं का समायोजन स्तर बेहतर होता है एवं

(iii) शहरी उत्तरदाताओं की अपेक्षा ग्रामीण उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह की भावना अधिक पाई जाती है।

सुझाव :

प्रस्तुत शोध के आधार पर सुझाव के रूप में कहा जा सकता है, कि वर्त्तमान समय में पूर्वाग्रह की भावना व्यक्तियों के व्यक्तित्व एवं जीवन—स्तर के अधिकांश भाग को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। जिस कारण उन्हें अपने समग्र के विकास में समस्याएँ उत्पन्न होती है। अतः आवश्यकता इस बात की है, कि पूर्वाग्रह एवं समायोजन को लेकर व्यापक एवं मानक स्तर पर शोध कार्य किया जाये जिसे व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक विकास हो सके।

संदर्भ सूची :

ऑलपोर्ट, जी०डब्लू० एंड रॉस, जे० एम० (1967) : पर्सनल रिलीजियस ओरिऐन्टेशन एंड प्रेजीड्यूस, जर्नल ऑफ पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 5(4), 432—443.

एडोरनो, टी० डब्लू०, लेविंस्टन, डी०जे० एंड सेनफोर्ड, आर० एन० (1950) : द अथरॉटिअन पर्सनालिटी, एन०वाय०, हॉर्पर, रॉ०.

नटराज, पी०, (1965) : सोशल डिस्टेंस विदिन एंड विटवीन कास्टस एंड डिलीजियस ग्रुप्स ऑफ कॉलेज गर्ल्स, जर्नल ऑफ सोशल साईकोलॉजी, 65(1), 135—140.

रॉस, एस०सी० (1950) : फिलोलॉजिकल प्रोवेवलिटी प्रॉब्लम्स्, जर्नल ऑफ रॉयल स्टेटिस्टिकल सोसायटी, सीरीज, वी० वॉल्यूम—12, इश्यू—1.

सरकार, एस०एन० एंड हसन, एम० के० (1973) : इकॉनोमिक कंजरवेशन एज रिलेटेड टू रिलीजन, कास्ट, पॅलिटिकल एफलिऐशन एंड ऑथोरिटेरियल्स इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, 48(41), 64—70.